॥ प्रेरणास्रोत ॥

मानव समस्या और समाधान

परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज के अनुसार, विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान एक धर्मशास्त्र, भगवान् श्रीकृष्णोक्त श्रीमद्भगवद्गीता से सम्भव है। गीता संस्कृत में है, जिसका प्रचलन अब विश्व में नहीं के बराबर है।गीताकी विशुद्ध जानकारीकेलिए ‘यथार्थगीता’काअनुशीलनकरें।

विश्वकीसमस्याएँ

- रक्तरंजितआतंकवाद
- साम्प्रदायिकउन्माद
- रंग-भेद
- स्त्रियोंकीदशा
- शोषणएवंआर्थिकसाम्राज्यवाद

समाधान केरूपमेंगीताक्या देतीहै?

परमात्मा की प्रथम वाणी, एकता, भ्रातृत्व का बल,समृद्धि कास्रोत,संगठन,सर्वमान्यशास्त्र, धर्म की व्याख्या, धर्माचरण की समग्र विधि, तत्त्वदर्शीसन्तकीपहचान,मज़हबीझगड़ोंसे

मुक्ति,प्रेयऔरपरमश्रेय।

भारतकीसमस्याएँ

वर्ण-व्यवस्था(जातिवाद)

गीता के अनुसार, आज की जातियाँ भगवान् ने नहीं बनायी। वर्ण भगवत्पथ के क्रमोन्नत सोपान हैं।

सम्प्रदायवाद और विरोधी पूजा-पद्धतियाँ

गीता के अनुसार ईश्वर-प्राप्ति की विधि एक है- नियत कर्म का आचरण। बहुत-सी विधियाँ मूढ़बुद्धिअविवेकियोंकीदेनहै।

बहुदेववाद

अन्य-अन्य देवता उन अविवेकियों के मन की उपज है, जो कामनाओं से आक्रान्त और विवशहैं।

स्त्रियोंकेअधिकार

गीता स्त्री-पुरुष दोनों को समान मानती है। दोनों ही क्षर अथवा अक्षर पुरुष हैं।दोनों में सेकोईभीपुरुषोत्तम होसकताहै।

हिन्दुओं में बिखराव- बौद्ध, जैन, सिख,वैष्णव, शैव, शाक्तइत्यादि।
आपसी फूट धर्मशास्त्र को न समझने से आयी है। शास्त्र मिलते ही वे एक घटक में समा जायेंगे।

धर्मान्तरण गीता के अनुसार मानव मात्र का धर्म एक है- एक परमात्मा के प्रति श्रद्धा, उसकी प्राप्ति की नियत विधि का आचरण, साक्षात्कार, दर्शन और स्थिति - तो अन्तरण कैसा?अन्तरणहोताहैरुढ़ियोंका, विचारों का,रहन-सहनका,धर्मकानहीं।

भ्रष्टाचार, ऊँच-नीच, सामाजिक असमानता, राजनीति में अपराधियों काप्रवेश

जब तक कुरीतियाँ रहेंगी, जनता को गुमराह करके लाभ उठानेवाले रहेंगे। गीता प्रकाश में आते ही यह गुमराहियत सहज शान्त हो जायेगी। कोईकिसी को भरमा नहीं सकेगा। मनुष्य मनुष्य को सगे भाई की तरह देखनेलगेगा।

बेरोज़गारी-‘रोटी,कपड़ाऔरमकान’
गीता मेंभगवान्कहतेहैंकिमुझेनियतविधि से भजकर लोग स्वर्ग तक की कामना करते हैंऔरमैंदेताहूँ।

आरक्षण - गीता के अनुसार, ‘ममैवांशो जीवलोके....’मनुष्य मेराविशुद्धअंशहै।जब उसमें जाति ही नहीं तो आरक्षण कैसा? सुविधा देना है तो आर्थिक आधार हो सकता है; किन्तु अछूत, अस्पृश्य, अनुसूचित, आदिवासी, जनजाति जैसे घृणासूचक शब्दों का चाँटा मारकर सुविधा देने का औचित्य नहींहै।

आतंकवाद- ’ एक लम्बी परम्परा जो भारत में लगभग सन् ११०० ई. से चल रहीहै।’
जब तक मुसलमान, ईसाई या हिन्दू रहेंगे, यह रहेगा। पहले धर्मशस्त्रों की समीक्षा कर आतंकवाद के जड़ की पहचान करें कि इनमें कितना समाजशास्त्र है और कितना अध्यात्म? जो धर्मशास्त्र है उसे अपनायें, आतंकवाद समाप्त हो जाएगा। सम्पत्ति के झगड़े हो सकते हैं किन्तु गिरोह बनाकर निरीह लोगों की नृशंस हत्या बन्द हो जायेगी।